RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

शिक्षा और समाज

डॉ. विजय शिंदे
देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद - 431005 (महाराष्ट्र)

समाज एक ऐसी संस्था है जिसके अंतगत बहुत कुछ समा सकता है। समाज और व्यक्ति का सनातन रिश्ता है और दोनों मे कौनसा घटक महत्त्वपूण है इस पर कई सालों से लंबी बहसे भी हो गई ह। व्यक्ति, समाज और शिक्षा को जोड़कर देखे तो फिर एक बार विषय की एहमियत सामने आ जाती है। सवाल यह निमाण होता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य समाजहित होता है कि व्यक्तिहित? व्यक्ति-व्यक्ति के समूह से समाज बनता है। अतः समाज की महत्त्वपूण इकाई व्यक्ति है। इसमें कोई दो राय नहीं कि शिक्षा का मूल उद्देश्य समाजहित है, लेकिन पूरे समाजहित की कल्पना करना और उसे अंजाम तक लेकर जाना बहुत मुश्किल है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का हित, आवश्यकताएं, कठिनाइयां और समूचे विकास को ध्यान म रखते हुए जब व्यवस्था बनाई जाती है तब अपने-आप समाजहित बनता है। शिक्षा म भी ऐसे ही होता है। उत्तम और सर्वोत्तम व्यक्तियों की निर्मिति के मूल म समाजहित होता है। लेकिन अंततः व्यक्ति का पूरा विकास जब चरमसीमा को छूता है तब उसका कार्य समाजहित के लिए लाभप्रद होना चाहिए। सोच, विचार और कृति समाजाभिमुख तथा उसकी उन्नति के अनुकूल होनी चाहिए। जब व्यक्ति का स्वाथ बीच म आकर अपने हित की बात करता है तब समाज की हानि होती है और शिक्षा का मूल उद्देश्य भी असफल बन जाता है। व्यक्तिहित और समाजहित का समन्वय शिक्षा का उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान म रखते हुए व्यक्ति, समाज और शिक्षा को देखा जाता है।

समाज के सवागीण अध्ययन की दृष्टि से शिक्षा का ताना-बाना बुना जाता है। विषयों का विभाजन और उसके अंतगत समाविष्ट सामग्री समाज से जुड़ी हुई होती है। इस सामग्री के अध्ययन से व्यक्ति, समाज और शिक्षा का संबंध प्रस्थापित होता है। "सामाजिक हित की पारंपारिक अवधारणा तीन विषयों के मिश्रण की है - इतिहास, भूगोल और नागरिकशास्त्र। निश्चय ही यह तीनों समाज के सम्यक अध्ययन में मदद देने वाले विषय है, किंतु केवल तब जब इन्हें एक-दूसरे से संबंधित करके पढ़ा जाए।"1 इन विषयों का समन्वित अध्ययन ही सामाजिक जीवन का परिचय बन जाता है। उनकी पृथक पढ़ाई असंभव है और ऐसी पृथक पढ़ाई मात्र विषय या किताबी बनकर रह जाती है। वतमान शिक्षा का दुभाग्य यह है कि समाज जीवन के इन तीन आधार स्तंभों का पृथक अध्ययन किया जाता है। अथ, राजनीति, धम, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा दुनिया की तमाम अध्ययन की सामग्री समाज और शिक्षा से संबंध रखती है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा समाज के लघु विषयों को लेकर आगे बढ़ती है और आगे चलकर उच्च शिक्षा में व्यापक रूप धारण करती है। लेकिन पढ़ाई हेतु रखी किताब और ऐसी शिक्षा समाज के साथ नाममात्र संबंध रखती है। समाज और शिक्षा का प्रत्यक्षदर्शी संबंध नहीं रहता है, वह किताबी बन जाता है। सामाजिक अध्ययन का साधन किताब नहीं तो समाज है। समाज का शिक्षा के साथ रिश्ता धुंधला बनते जा रहा है। स्कूलों म समाज का जो भ्रम पैदा हो जाता है वह किताबों के जरिए ही होता है। सामाजिक जीवन का चित्रण शब्दों म किया जाता है और उसके अध्येता शब्दों के आधार से कल्पना करते ह। इसी कल्पना के आधार पर समाज का अध्ययन जारी रहता है। समाज और अध्येताओं के बीच शब्दों का पूल रहता है जो शिक्षा की असफलता को साबित करता है। अतः शिदक्षा को दीवारों से परे जाकर, किताबों से बाहर निकलकर समाज के साथ प्रत्यक्षदर्शी संबंध स्थापित कर देखने की जरूरत है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति, व्यापारी, व्यावसायिक, किसान और वैज्ञानिक आदि का शिक्षा से संबंध स्थापित होना चाहिए। ऐसी प्रक्रिया से जिन बच्चों के लिए शिक्षा का निमाण किया गया है उनकी निर्भरता अध्यापक और किताबें न रहकर समाज पर रहने लगेगी तब शिक्षा और समाज का संबंध दृढ़ बनेगा।

व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय की जरुरत है। इसकी पूर्ति शिक्षा द्वारा की जा सकती है। व्यक्ति और समाज को भिन्न मानकर या किसी एक को महत्त्व देकर शिक्षा का आयोजन भविष्य को अंधकारमय बनाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए अपने अधिकारों के साथ उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहने की अपेक्षा है। समाज के प्रति जिम्मेदारियों का एहसास, जागृति पैदा करने की क्षमता शिक्षा म होनी

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

चाहिए। "आज व्यक्ति का समाज के साथ संयोग और सुसंवाद निमाण करना हो शिक्षा का काय समझा जाता है।"2 शिक्षा मे जो नए विचार मुखरकर सामने आए ह उनम व्यक्तिवादी और समाजवादी उद्देश्यों को संगति बिठाने का प्रयास किया जा रहा है। व्यक्ति जब पैदा होता है तब उसका दिमाग पूरी तरह खाली होता है। आसपास का परिवेश, परिवार और समाज म निहित सभी शाखाओं का समय-समय पर उसके साथ संबंध जुड़ता रहता है। इन्हीं संबंधों के जुड़ने से उसे शिक्षा मिलती है। वह संस्कारित बन कर उसके व्यक्तित्व का विकास होने लगता है। अतः व्यक्ति की पाठशाला और अध्ययन का क्षेत्र किताब और पाठशाला नहीं तो समाज होता है। समाज जितना सुदृढ़ और साफ-सुथरा होगा उतनी ही व्यक्ति-शिक्षा खतरे से खाली रहेगी।

शिक्षा और समाज का सिफ नजदीकी संबंध नहीं है बल्कि समाज पर आधारित शिक्षा का निमाण होता है। समाज एक ऐसी संस्था है जो समय और काल के अनुकूल परिवर्तित होती है। प्राचीन या मध्यकाल म जो सामाजिक व्यवस्था थी वह आज नहीं है और आज जो है वह कल नहीं रह जाएगी। स्थान और प्रदेश के अनुकूल भी समाज का अलग रूप दिखाई देता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था अन्य देशों की तुलना म अलग है। उसी सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल वहां की शिक्षा व्यवस्था का निर्माण होता है। स्थान, काल, समय, परिवेश, संस्कृति आदि का परिणाम शिक्षा पर होता है, इनके परिवतन से शिक्षा म परिवतन होता है। अतः तुलनात्मक अध्ययन करते हुए समाज परिवतन के साथ पाठ सामग्री और किताबों का पूनर्निमाण नितांत आवश्यक है। राष्ट्र विकास और भविष्य निमाण की दृष्टि से उन सूक्ष्म परिवतनों का लेखा-जोखा समय-समय पर लेकर शिक्षा म परिवतन करना सरकार, शिक्षा के विद्वतजन और समाजशास्त्रियों का प्रथम कतव्य है। समाज पर शिक्षा, शिक्षा पर समाज निभर है। "एक ही समाज की शिक्षा भी समाज म परिवतन आ जाने पर कालांतर म बदल जाएगी। इन परिवतनों का लेखा रखना शिक्षा के इतिहास का क्षेत्र है। समाज के शैक्षिक परिवतनों के कारण सामाजिक गतिशीलता है और इनका अध्ययन ऐतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय दोनों दृष्टियों से हो सकता है।"3 अतीत, वतमान और भविष्य को ध्यान म रखते हुए बनाई गई शिक्षा व्यवस्था ही समाज के विकास का दावेदार मानी जा सकती है। इन सबका तुलनात्मक अध्ययन करते हुए समाजशास्त्रीय और शिक्षाशास्त्रियों द्वारा शिक्षा का मूल्यांकन होता है।

आज नए संदभ म शिक्षा और समाज के पारस्परिक संबंधों को देखने की आवश्यकता है। प्राचीन काल म जो समाज व्यवस्था थी वह आज नहीं है। विज्ञान युग के व्यापक प्रसार से दूर-दराज के देश नजदीक आ गए ह। समाज व्यापक बनता जा रहा है और इसी व्यापक समाज की दृष्टि से शिक्षा का विचार करना चाहिए। शिक्षण अपने-आप म एक विस्तृत संसार है और उसे इस संसार का प्रतिबिंब भी कहा जा सकता है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते समय वह समाजाधीन रहता है और समाज के निमाण स्थलों म शीघ्रता लाने की दृष्टि से शिक्षा समाज की सहायता करती है। समाज की व्यापक जरूरतों को ध्यान म रखते हुए शिक्षा को उसकी सहायता करनी पड़ती है। विज्ञान युग म नए भविष्य निमाण के लिए शिक्षा को विविध दृष्टिकोणों से परिवर्तित करते हुए सावधानी से काम लेना चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से मात्र सीमित कल्याण की कल्पना की जा सकती है। यथाथ यह है कि नए वैज्ञानिक युग के संदभ में कृषि को लक्ष्य बनाकर शिक्षा म समूल परिवतन करते हुए समाजाभिमुख बनाई जाए। विज्ञान युग समाजहित से विमुख हो रहा है। अतः "शिक्षा को उत्तरजीविता, समता और स्वायत्तता की समस्याओं के समाधान मा अपने को लगाना होगा, क्योंकि यही तीन आज के मानव की सबसे अधिक आवश्यक समस्याएं ह। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा की वतमान संरचना को बदलकर ऐसी वैकल्पिक समांतर रचना विकसित करनी होगी, जिसके साथ समान स्वीकृति, प्रतिफल ओर वैधता जुडी हो।"4 विश्व समाज के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना के लिए सवस्वीकृत, उचित और सबको फलदायी शिक्षा नीति की आवश्यकता भविष्यकालीन समाज की मांग रही है।

संदभ संकेत

1. कृष्णकुमार - राज, समाज और शिक्षा, पृ. 61
2. ग. वि. अकोलकर - शैक्षणिक तत्त्वज्ञानाची रूपरेखा, पृ. 54
3. ए. के. सी. ऑटवे - शिक्षा और समाज, पृ. 14
4. श्यामाचरण दुबे - शिक्षा, समाज और भविष्य, पृ. 28